Dr. Dhananjay Kumar
Assistant Professor
S.R.A.P College
Course — BA I

मुगल और राजपूताना क्षेत्र में विस्तार / राजपूत नीति

- अग्निकुंड सिद्धांत से चार राजपूत वंशों की उत्पत्ति के उत्पन्न का सिद्धांत मिलता।

इसके अलावा इस दौर में कई राजपूत वंश भी थे जैसे चंदेल।

- मो० बीन कासिम का आक्रमण : किसी राजपूत वंश पर नहीं। हिन्दू ब्राह्मण वंश पर (दाहिर)

- गजनी विभिन्न आक्रमण राजपूतों के क्षेत्रों में

- गौरी : पृथ्वी राज III तराईन I, II
  , जयचन्द्र

- ऐबक : चन्देल वंश के परमादिदेव को पराजित।

- अलाउद्दीन खिलजी : 1299 चौलुक्य वंश के रायकर्ण देव बघेला को पराजित।

- 1301 : रणथम्भौर के चौहान वंश हम्मीरदेव को पराजित

1309 —

1305 — मालवा, महलकदेव

1308 — सेवाना सितलदेव

1311 : जालौर कान्हरदेव

→ बाबर : खानवा का युद्ध, राणा सांगा पराजित हुआ, लेकिन राजपूत की शक्ति पूरी तरह खत्म नहीं।

हुमायूँ : राजनीतिक अस्थिरता का दौर रहने के कारण, राजपूताना क्षेत्र की ओर ध्यान नहीं देना।

अकबर का दौर :

→ अकबर अपने दौर में राजपूताना क्षेत्र की चुनौति को समाप्त करने के लिए राजपूत के इतिहास को काफी बारीकी से समझा और इस सच्चाई से अवगत हुए है कि :—

① भारत में इस समय केवल राजपूत ही सबसे राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक है अतः सबसे अधिक चुनौति जागरूक से ही मिलती है, जबतक इस चुनौति को खत्म नहीं किया जाएगा, भारत में मुगल सत्ता को स्थिरता नहीं मिल पाएगी।

(ii) राजपूती राज्य मुगलो को MP और राजस्थान के क्षेत्रो से घेरा हुआ है जबतक यह राजपूत राज्य रहेगा तबतक दिल्ली आगरा पर खतरा बना रहेगा। अतः राजपूती राज्यो को समापन करना आवश्यक है, मुगल साम्राज्य के ——— के लिए। उनका मानना था यदि ऐसी राज्यो के साथ युद्ध नही किया जाएगा तो वे हमलोगो के विरुद्ध युद्ध कर देंगे।

(iii) अकबर इस सच्चाई से वाकिफ थे कि बाबर ने खानवा के युद्ध मे राणा सांगा को पराजित किया। जो मुगलो के लिए ऐतिहासिक महत्व का युद्ध रहा था। इस युद्ध से यह स्पष्ट हो गया था कि दिल्ली आगरा पर राजपूतो का नियंत्रण नही हो पाएगा, लेकिन इस युद्ध से यह स्पष्ट नही हुआ था कि मुगल सत्ता को स्थिरता मिल गई और भविष्य मे इसे राजपूतो से चुनौती नही मिलेगी। खानवा के युद्ध मे राजपूत सत्ता भले ही राजपूत सत्ता

पराजित हो गया था लेकिन राजपूतो की शक्ति समाप्त नही हुई थी अत। मुगल साम्राज्य को स्थिरता, सुरक्षा प्रदान करने के लिए इन राजपूती राज्यो पर नियंत्रण करना आवश्यक है।

(2) भारत में अभी भी लोग मुगलो को बाहरी और विदेशी समझते थे, हमारे पूर्वजो को इतना वक्त नही मिला कि वे विदेशी पन को समाप्त कर सके और भारत के लोगो को समझा सके कि हम यही के है

(v) अकबर अपने धार्मिक नीतियो के जरीए भारतीय संस्कृति में अपने को घुला-मिला लिया और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण पेश किया भारतीय संस्कृति मे इतना घुला मिला लिया कि भारतियो को लगा रहा है कि यह कोई अपना ही शासक है, ये भारतीयो के पर्व त्योहार में खुलकर भाग लेना शुरू किया।

(vi) अकबर राजपूतो के कुछ सकारात्मक गुण से परिचित थे जिसका उपयोग करके वे साम्राज्य को विस्तार दे सकते थे और वे राजपूत के कुछ negative गुणो से परिचित थे जिससे

वे मुगलों से उसे आसानी से साबित कर सके थे।

राजपूत के Positive	राजपूत के Negative
(i) राजनैतिक रूप से जागरूक	• एकता का अभाव
(ii) लंबा प्रशासनिक अनुभव	• संकुचितता
(iii) सैन्य अनुभव	• तकनीकि रूप से सुधार में रुचि नहीं लेना युद्ध क्षेत्र में
(iv) वीर भावना	• सामाजिक अखंडता का अभाव।
(v) स्वामि भक्ति	• विलासितापूर्ण जीवन जीना,
• अस्वच्छता

• अकबर के राजपूत नीति के सार विशेषता क्या?

(i) सर्वोच्चता की नीति / अधीनता की नीति:

राजपूत राजा यह माने कि मुगल सत्ता भारत में सर्वोच्च है और मुगलों की संधि को स्वीकार करें। जैसे ही वे मुगलों की संधि को स्वीकार करेंगे उन राजपूत राजाओं की स्वतंत्रता समाप्त हो जाएगी वे मुगलों के अधीन हो जायेंगे।

– राजपूत अपने रियासत क्षेत्र में स्वतंत्र रहेंगे